Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

1SA

1 शमूएल 1:1–2:11, 1 शमूएल 2:12–7:17, 1 शमूएल 8:1–12:25, 1 शमूएल 13:1–15:35, 1 शमूएल 16:1–17:58, 1 शमूएल 18:1–23:29, 1 शमूएल 24:1–26:25, 1 शमूएल 27:1–31:13

1 शमूएल 1:1–2:11

हन्ना के बच्चे नहीं हो सकते थे। इस प्रकार वह सारा, रिबका, राहेल और शिमशोन की माता के समान थीं।

उनके पति एल्काना इस बारे में परेशान नहीं थे। लेकिन हन्ना एल्काना की पत्नियों में से केवल एक थीं। एल्काना की दूसरी पत्नी का नाम पनिन्ना था। पनिन्ना हन्ना के प्रति निर्दयी थीं क्योंकि हन्ना के बच्चे नहीं हो सकते थे।

हन्ना बहुत दुःखी थीं और उसने परमेश्वर को अपनी सारी परेशानियाँ बताईं। उसकी प्रार्थना से पता चलता था कि वह परमेश्वर के कितनी निकट थी। हन्ना ने परमेश्वर से प्रार्थना की कि वे उन्हें एक पुत्र दें। उसने वादा किया कि उसका पुत्र अलग किया जाएगा और नाज़ीर होगा।

एली ने हन्ना पर आशीष के वचन बोले। जब शमूएल बड़ा हो गया, तो हन्ना ने वह वादा पूरा किया जो उसने परमेश्वर से किया था। वह शमूएल को शीलो ले गईं ताकि वह एली के साथ प्रभु के घर में रहे। यह पवित्र तंबू का दूसरा नाम था।

हन्ना की दूसरी प्रार्थना परमेश्वर की स्तुति का एक कविता था। उसने परमेश्वर की स्तुति की क्योंकि परमेश्वर ने ज़रूरतमंद लोगों को बचाया और उद्धार किया। उसकी प्रार्थना एक भविष्यवाणी भी थी, एक राजा के बारे में जो अभिषिक्त होगा। उसने परमेश्वर की स्तुति की क्योंकि वे बुराई के खिलाफ न्याय लाए।

कई वर्षों बाद, यीशु की माता मरियम ने इन्हीं बातों के लिए परमेश्वर की स्तुति में एक गीत गाया (लूका 1:46–55)।

1 शमूएल 2:12–7:17

एली के पुत्रों ने याजकों के रूप में बुरे काम किए और एली ने उन्हें नहीं रोका। शमूएल ने उनसे अलग व्यवहार किया। शमूएल हारून की वंशावली से नहीं था। लेकिन उसने वैसे ही परमेश्वर की विश्वासयोग्यता से सेवा की जैसे याजकों को करनी चाहिए थी।

पहला संदेश जो शमूएल ने एक भविष्यद्वक्ता के रूप में साझा किया, वह एली और उसके पुत्रों के खिलाफ था। भविष्यवाणी तब सच हुई जब इस्राएल के लोगों और पलिश्तियों के बीच एक युद्ध हुआ। इस्राएली चाहते थे कि परमेश्वर उनकी रक्षा करें और उन्हें युद्ध में विजय दिलाएं। उन्होंने वाचा के सन्दूक का उपयोग परमेश्वर को ऐसा करने के लिए मजबूर करने की कोशिश में किया। लेकिन वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं कर रहे थे और न ही उन पर भरोसा कर रहे थे कि वे उन्हें बचाएंगे। यह यरीहो के खिलाफ युद्ध में सन्दूक के उपयोग से बहुत अलग था (यहोशू 6:1–14)।

पलिश्तियों के साथ युद्ध में एली के पुत्रों की मृत्यु हो गई। एली की मृत्यु तब हुई जब उसने सुना कि पलिश्तियों ने वाचा का सन्दूक ले लिया है। पलिश्तियों को एक महामारी का सामना करना पड़ा क्योंकि उन्होंने सन्दूक ले लिया था। यह महामारी उनके खिलाफ परमेश्वर का न्याय था। इसने उन्हें दिखाया कि परमेश्वर उनके झूठे देवताओं से अधिक शक्तिशाली हैं।

जब सन्दूक को इस्राएल लौटाया गया, तब शमूएल ने इस्राएलियों की अगुवाई की। वह अंतिम व्यक्ति था जिसने 12 न्यायियों की तरह अगुवाई की। उसने इस्राएलियों को परमेश्वर की ओर लौटने में मदद की। उन्होंने झूठे देवताओं की पूजा करना बंद कर दिया और इसके बजाय एकमात्र परमेश्वर की आराधना की । इससे यह दिखा कि वे सीनै पर्वत की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य थे। तब परमेश्वर ने उन्हें उनके शत्रुओं से बचाया। यह वाचा की आशीषों में से एक था।

1 शमूएल 8:1–12:25

शमूएल के पुत्र परमेश्वर के प्रति वैसे विश्वासयोग्य नहीं थे जैसे शमूएल था। इस्राएली उन्हें अपने अगुवे के रूप में नहीं चाहते थे। इस्राएली अब न्यायियों द्वारा अगुवाई नहीं चाहते थे। वे अब एकमात्र परमेश्वर को अपना शासक नहीं चाहते थे। इसके बजाय, वे चाहते थे कि एक मनुष्य उनका राजा बने।

इस्राएलियों के आसपास के लोगों के समूह राजाओं द्वारा अगुवाई किए जाते थे। इस्राएली उन लोगों की तरह बनना चाहते थे। उन्हें लगा कि एक मानव राजा उनकी समस्याओं का समाधान करेगा। इस्राएलियों की समस्या यह थी कि

उनके आसपास के लोगों के समूह उनके साथ बुरा व्यवहार कर रहे थे। यह वाचा के शापों में से एक था।

यह इसलिए हुआ क्योंकि इस्राएली सीनै पर्वत की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य नहीं थे। यह इसलिए हुआ क्योंकि उन्होंने कनानियों को पूरी तरह से नहीं निकाला। इस्राएलियों ने सोचा कि एक मानव राजा उन्हें उन जातियों पर युद्ध जीतने में मदद करेगा। इस प्रकार वे वाचा की आशीषों की शांति का आनंद लेने की आशा करते थे।

युद्ध जीतना उनके लिए परमेश्वर की सम्पूर्ण हृदय से सेवा करने से अधिक महत्वपूर्ण था। इससे शमूएल को बहुत दुःख हुआ। इससे परमेश्वर को भी बहुत दुःख हुआ। परमेश्वर ने अपने लोगों (परमेश्वर के लोग) को एक राजा रखने की अनुमति दी। शमूएल ने स्पष्ट रूप से समझाया कि राजा को कैसे व्यवहार करना चाहिए। वे नियम व्यवस्थाविवरण 17:14–20 में उल्लेखित हैं।

शाऊल ने एक विनम्र राजा के रूप में शुरुआत की। वह एक किसान था और पवित्र आत्मा द्वारा उपयोग किए जाने के लिए तैयार था। सभी इस्राएली उसे स्वीकार करते थे। उन्होंने शाऊल को तब स्वीकार किया जब उसने याबेश गिलाद नगर को अम्मोन के राजा से बचाया।

शमूएल ने इस्राएलियों को स्पष्ट कर दिया कि उन्होंने परमेश्वर को अपने राजा के रूप में स्वीकार करने से इंकार कर दिया था। वे इस बात से दुःखी थे कि उन्होंने ऐसा किया था और उन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने पाप किया था। शमूएल ने उन्हें प्रोत्साहित किया कि चाहे कुछ भी हो जाए, वे परमेश्वर का अनुसरण करें। लोगों और राजा को परमेश्वर के मार्गों के अनुसार जीवन जीना था।

1 शमूएल 13:1–15:35

इस्राएल के राजा के रूप में, शाऊल ने मूर्खतापूर्ण निर्णय लिए। उसने गिलगाल में पशु बलि के बारे में परमेश्वर के निर्देशों का उल्लंघन किया। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह डर गया था। उसे लगा कि युद्ध में विजय पाने के लिए उसे एक बड़ी सेना की आवश्यकता है।

उसने अपने सैनिकों से वादा करवाया कि वे युद्ध के दिन बिना भोजन के रहेंगे। उसका मानना था कि उपवास करने से उन्हें युद्ध में परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त होगा। फिर भी इन बातों का उनकी विजय के लिए कोई महत्व नहीं था। न ही इस बात का महत्व था कि इस्राएलियों के पास हथियार नहीं थे। परमेश्वर ने पलिश्तियों में थरथर्राहट उत्पन्न की। इसने इस्राएलियों को विजय दिलाई।

इसके बाद शाऊल अपने मूर्खतापूर्ण वचन को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध था कि वे योनातान को मार डालेंगे। यह यिप्तह के मूर्खतापूर्ण वचन के समान था, जो उसने युद्ध जीतने के बाद किया था (न्यायियों 11:30–40)। लेकिन शाऊल के सैनिकों में बुद्धि थी और वे साहसी थे। उन्होंने शाऊल को योनातान को मार डालने से रोका।

बाद में, शाऊल ने अमालेकियों के बारे में परमेश्वर की आज्ञा का पूरी तरह पालन नहीं किया। उन्हें परमेश्वर के लिए अलग किया जाना था और पूरी तरह नष्ट कर दिया जाना था। इस प्रकार परमेश्वर अमालेकियों के खिलाफ न्याय लाते। इसके बजाय, शाऊल ने उनके कई पशुओं को बचा लिया और राजा को जीवित रहने दिया। इन सभी बातों से पता चला कि शाऊल एक मूर्ख और घमंडी राजा था। उसने उन आज्ञाओं का पालन नहीं किया जो परमेश्वर ने राजाओं के शासन के लिए दी थीं। उसने लोगों को परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बनने में मदद नहीं की।

परमेश्वर इस बारे में बहुत दुःखी थे और शमूएल भी बहुत दुःखी और क्रोधित था। शमूएल ने स्पष्ट कर दिया कि शाऊल अब परमेश्वर की प्रजा पर राजा नहीं बना रहेगा। इसका मतलब यह नहीं था कि शाऊल तुरंत शासन करना बंद कर देगा। इसका अर्थ था कि शाऊल के बाद आने वाले पुत्र राजा नहीं बनेंगे। इसके बजाय किसी अन्य परिवार की वंशावली से कोई राजा बनेगा।

1 शमूएल 16:1–17:58

परमेश्वर ने दाऊद नाम के एक चरवाहे को इस्राएल का अगला राजा चुना।

शाऊल नहीं जानता था कि शमूएल ने दाऊद का अभिषेक किया है और परमेश्वर की आत्मा दाऊद के साथ है। शाऊल ने दाऊद को उसके पिता यिशै से अपना सेवक होने के लिये ले लिया। शमूएल ने इस्राएलियों को चेतावनी दी थी कि एक राजा ऐसा करेगा। दाऊद ने शाऊल का कवच लेकर और उसके लिये वीणा बजाकर उसकी सेवा की। संगीत ने शाऊल को शांत होने में मदद की जब वह परेशान था और भयभीत महसूस कर रहा था।

जब शाऊल पहली बार राजा बना तब से वह बदल गया था। उसने एक विनम्र किसान के रूप में शुरुआत की थी जो परमेश्वर की आत्मा द्वारा उपयोग किए जाने को तैयार था। वह राजा के रूप में एक शक्तिशाली योद्धा बन गया। परन्तु फिर वह अभिमानी और मूर्ख बन गया। वह अब परमेश्वर द्वारा उपयोग किये जाने का इच्छुक नहीं था। और इस प्रकार परमेश्वर की आत्मा ने उसे छोड़ दिया। इसके बाद शाऊल और भी अधिक भयभीत हो गया। वह इतना भयभीत था कि वह गोलियत से लड़ना भी नहीं चाहता था।

गोलियत एक विशाल और शक्तिशाली पलिश्ती सैनिक था। केवल दाऊद ही उससे लड़ने को तैयार था। दाऊद एक बहादुर और चतुर योद्धा था। उसे परमेश्वर पर पूरा विश्वास था

कि वह उसे बचाएँगे। गोलियत ने दाऊद को श्राप देने के लिए अपने झूठे देवताओं के नामों का इस्तेमाल किया। दाऊद ने यहोवा के नाम से गोलियत के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। परमेश्वर ने दाऊद को विजय दिलाई। इससे पता चला कि परमेश्वर पलिश्तियों के झूठे देवताओं से अधिक सामर्थशाली थे।

1 शमूएल 18:1–23:29

शाऊल के परिवार के सदस्य दाऊद से प्रेम करते थे। योनातान ने दाऊद के साथ मित्रता की एक वाचा बाँधी जो सदा के लिए रहेगी। योनातान ने स्वीकार किया कि परमेश्वर ने दाऊद को इस्राएल का अगला राजा चुना है। वह दाऊद का समर्थन करना चाहता था जब दाऊद राजा होगा। उसने कई बार दाऊद को शाऊल से बचाया।

शाऊल की बेटी मीकल दाऊद से प्रेम करती थीं। दाऊद की पत्नी के रूप में, वह दाऊद की रक्षा के लिए अपने पिता से झूठ बोलने को तैयार थी। दाऊद को शाऊल की सेना में एक अधिकारी के रूप में अधिक से अधिक सफलता मिल रही थी। लेकिन शाऊल भय और ईर्ष्या से अधिकाधिक नियंत्रित हो रहा था। उसने यह स्वीकार करने से इनकार कर दिया कि परमेश्वर ने दाऊद को राजा चुना था।

परमेश्वर की ओर लौटने के बजाय, शाऊल ने बार-बार दाऊद को मारने की कोशिश की। पहले उसने दाऊद को युद्धों में भेजा, उम्मीद करते हुए कि वह लड़ाई में मारा जाएगा। फिर शाऊल ने योनातान को मारने की कोशिश की क्योंकि उसने दाऊद की रक्षा की थी। इसके बाद, दाऊद शाऊल से दूर भाग गया। शाऊल ने पूरे नगर के याजकों को मरवा दिया क्योंकि अहीमेलेक ने दाऊद की मदद की थी। इससे यह दिखा कि शाऊल को उन लोगों का कोई सम्मान नहीं था जो परमेश्वर की सेवा के लिए अभिषिक्त थे।

जब दाऊद शाऊल से भागा, तो कई सैनिक और उनके परिवार उसके साथ शामिल हो गए। एब्यातार याजक ने भी ऐसा ही किया। लेकिन कई अन्य इस्राएली दाऊद को शाऊल के हवाले करने के लिए तैयार थे। फिर भी, दाऊद और उनके लोग पलिश्तियों से इस्राएलियों को बचा लेते थे।

1 शमूएल 24:1–26:25

शाऊल ने दाऊद को मारने के लिए लंबे समय तक उसका पीछा किया। दो बार दाऊद को शाऊल को मारने का अवसर मिला। दोनों बार उसके सैनिकों ने उसे ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया। लेकिन दाऊद ने शाऊल का सम्मान किया क्योंकि परमेश्वर ने उसे इस्राएल का पहला राजा चुना था। दाऊद उस व्यक्ति को नुकसान नहीं पहुंचाना चाहता था जिसे परमेश्वर की सेवा के लिए अभिषिक्त किया गया था।

परन्तु दाऊद नाबाल को हानि पहुँचाना चाहता था क्योंकि उसने दाऊद के साथ निर्दयी व्यवहार किया। दाऊद ने नाबाल के घराने के सभी लोगों को मार डालने की मूर्खतापूर्ण और हिंसक प्रतिज्ञा की। अबीगैल एक बुद्धिमान और बहादुर महिला थी। उसके शब्दों ने दाऊद को अपने शत्रु को न मारने के लिए प्रोत्साहित किया। जब नाबाल शीघ्र ही मर गया, तो दाऊद उसकी मृत्यु का दोषी नहीं था।

1 शमूएल 27:1–31:13

दाऊद और उनके लोग इस्राएल में सुरक्षित नहीं थे। एक पलिश्ती राजा ने उन्हें रहने के लिए एक नगर दिया। इस्राएलियों के बीच न रहना दाऊद के लिए बहुत कठिन था। इस्राएल में रहने की अनुमति न दिया जाना वाचा के अभिशापों में से एक था। फिर भी दाऊद हमेशा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहा और केवल परमेश्वर की ही आराधना की।

फिर अमालेकियों ने दाऊद के नगर को नष्ट कर दिया। उन्होंने दाऊद के परिवारों और उनके पुरूषों के परिवारों को बंदी बना लिया। दाऊद और उनके सैनिक इस बारे में बहुत दुःखी थे और कड़वे मन के हो गए। परमेश्वर ने उनकी सहायता की ताकि वे अपने परिवारों और सामान को वापस पा सकें। यह तब हुआ जब पलिश्ती इस्राएलियों पर आक्रमण करने गए।

शाऊल पलिश्ती सेना से बहुत डर गया था। उसने स्वप्न, भविष्यद्वक्ताओं और ऊरीम के माध्यम से परमेश्वर से सलाह प्राप्त करने की कोशिश की। लेकिन उसने उन वचनों पर विश्वास करने से इनकार कर दिया था जो परमेश्वर ने पहले ही शमूएल के माध्यम से उसे बताए थे। फिर उसने एक महिला से मदद मांगी जो एक भूत-सिद्धि करनेवाली स्त्री थी। इसका मतलब है कि वह आत्माओं से बात करती थी। वह उन लोगों के आत्मिक भाग से बात करती थीं जिनके शरीर मर चुके थे।

शमूएल की आत्मा ने शाऊल से वे ही बातें कहीं जो शमूएल ने पहले शाऊल से कही थीं। शाऊल का वंश अब राजा के रूप में शासन नहीं करेगा। शाऊल, योनातान और शाऊल के दो अन्य पुत्र पलिश्तियों के खिलाफ युद्ध में मारे गए। दाऊद बहुत दूर था और शाऊल की मृत्यु के लिए दोषी नहीं था। शाऊल की मृत्यु के बाद, याबेश गिलाद के लोगों ने उसके शरीर का सम्मान किया। ये वे ही लोग थे जिन्हें शाऊल ने राजा के रूप में अपनी पहली लड़ाई में बचाया था।